International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 1; Issue 11; November 2016; Page No. 61-63

'लुटेरे छोटे छोटे' लघुकथा संग्रह में व्यक्त परिवार एवं राजनीति

सुमन बाला

Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, India

प्रस्तावना

श्री सत्यप्रकाश भारद्वाज कृत 'लुटेरे छोटे छोटे' लघुकथा संग्रह एक ओर भावनाओं को वाणी देती है तो दूसरी ओर अनेक विकसनशील भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान करने में सक्षम हैं। किसी रचना की मूल संवेदना ही उसका कथ्य है। यह उन व्यक्तिगत या समष्टिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जिन्हें आज का साहित्यकार जीता और भोगता है। इसका संबंध जीवन की उन यर्थाथ स्थितियों से होता है, जिनके भीतर मामूली से मामूली आदमी सांस लेता है। साहित्यकार समग्र जीवन को उसकी सारी अच्छाईयों, बुराईयों सहित अपनी रचना में प्रस्तुत करता है। युग की आवश्यकता के अनुरूप उसे ढालता है। [1] 'डालास्ट्रीम' ने थीम (कथासूत्र) को विषय (सबजैक्ट) स्थिति (सिचुएशन) और कथावस्तु से परिभाषित करते हुए उसे दिशा निर्देशक विचार, अभिप्राय, उपदेश और निश्चित उक्ति कहा है। [2] कथ्य का शब्दिक अर्थ कहने योग्य या कथनीय या मूल भाव माना जाता है। इस प्रकार कथ्य और कथानक दोनों में अंतर है।.... कथानक एक काव्यांग है, परंतु उसे कथ्य कहना संकुचित अर्थ का द्योतक है, जिसके द्वारा कहानी बुनी जाती है, जबकि कथ्य कहानी की आंतरिक अनुभूति से संबंधित होता है। 'शहद में डूबे शब्द'लघुकथा से एक उदाहरण देखिए–

सुरेश पिता जी के साथ लड़की देखने पहुँचा। वह अभी तक कई लड़कियाँ देख चुका था परन्तु अभी तक उसे कोई लड़की पसंद नहीं आई थी। यहाँ आकर उसे लगा कि बात बन जाएगी। लड़की के पिता की फैक्ट्री थी। मॉडल टाउन में कोठी थी। दरवाजे पर दो–दो कारे थी। उसे लगा जिस प्रकार का घर परिवार उसे चाहिए था। अंततः वह वहाँ पहुँच ही गया था।

लड़की आई। हल्ला सांवला रंग। वह सामान्य लड़कियों जैसी थी। सुरेश ने उसकी और विशेष ध्यान न दिया। पिता ने उसकी और देखा तो उसने संकेत से अपनी स्वीकृति दे दी।

'लड़के लड़की को बात–चीत करने दें। चलिए! आपका घर ही देख लें!' 'आपके पिताजी का व्यापार तो काफी अच्छा चल रहा है। वे विवाह तो धूम–धाम से करेंगे ही। हाँ! टाप तो कारों में घूमती हैं। मैं आपको कार में न घुमा सकूँगा। यदि आपके पिता जी कार भी दे दे तो अच्छा रहेगा। देखिए! बुरा मत मानिएगा। मैं स्पष्ट बातें करने वाला हूँ। मैं दहेज वगैरह का कट्टर विरोधी हूँ। यह कार की बात भी आपकी सुविधा के लिए ही कह रहा हूँ।'

लड़की के चेहरे पर मुस्कराहट तैर आई। उसने शब्दों में शहद घोलते हुए–कहा'मैं भी स्पष्ट बातें करना पसंद करती हूँ। मैं भी ऐसे युवक से विवाह करना चाहती हूँ जो दहेज विरोधी हो। रही कार की बात तो मैं आपके स्कूटर पर ही घूमने के लिए तैयार हूँ। आपके पास स्कूटर तो होगा ही।'

शहद में डूबे शब्द सुरेश के हदय में विष बुझे बाण से चीरते चले गये। वह उठ खड़ा हुआ और पिताजी को बुलाने लगा। [3]

कथ्य का अर्थ है– किसी वस्तु के आंतरिक सूक्ष्म भाव। यह लेखक का संवेदन है। साहित्यकार की संवेदना अथवा अनुभूति ही कथ्य है। उसकी अनुभूति अभिव्यक्ति के क्षणों में अमूर्त होती है। वह इसे मूर्त रूप देने के लिए बाह्य उपादानों, साधनों का आश्रय लेता है, जिसे शिल्प कहते हैं। परिस्थितिवश किसी युग के काव्य में भाव–पक्ष की प्रबलता दृष्टिगत होती है, तो किसी अन्य युग के काव्य में कला–पक्ष की प्रधनता रहती है। किसी युग के काव्य में अंर्तमुखी हो गया है तो किसी युग का लेखक बहिर्मुखी है। [4] 'लुटेरे छोटे छोटे' लघुकथा संग्रह में पारिवारिक तालमेल की शिक्षा दी है। परिवार व्यक्ति और समाज दोनों के लिए परस्पर धुरी के समान है।

'अपना–अपना ईमान'लघुकथा से एक उदाहरण देखिए–

'त्योहार के अवसर पर वह उस दुकान से आवश्यक सामान खरीदकर घर पहुँचा। सामान घर पर रखते ही उसे याद आया वह दुकानदार को पैसे देना भूल गया था। उसने पत्नी को बताया तो वह कहने लगी–'देखो! पैसे देने में भूल–चूक तो हो ही जाती है! डसे पैसे दे आओ।'

'क्या बात कर रही हो ये दुकानदार तो ग्राहकों को दोनों हाथों से लूटते जा रहे है। इनका बस चले तो देश को लूट कर खा जाएँ।" पत्नी ने दोबारा अपनी बात पर जोर देते हुए कहा–"आप जानते ही हैं, हमारे देश के कर्णधार ही देश को बेचने पर तुले हैं। हर नेता घोटालों में संलिप्त है। लेकिन हमें तो अपने दीन–ईमान पर अडिग रहना है।'

उसी पत्नी की बात उचित लगी। वह भी नेताओं–सा बेईमान हो गया तो दोनों में क्या अंतर रह जाएगा? वह तुरन्त उठकर दुकानदार के पैसे देने चल पड़ा। [5]

समाज में स्त्री और पुरूष विवाह के बंधन में बंधकर परस्पर विपरीत मनोभावों व वैचारिकता में सामंजस्य बैठाकर परिवार का सृजन करके आपस में सहयोग की भावना का विकास करते हैं। परिवार में परस्पर सहयोग की भावना होती है। समाजशास्त्री मैकाइवर एवं पेज लिखते हैं– ''परिवार पर्याप्त निश्चित यौन संबंध द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों को पैदा करने तथा लालन–पालन करने की व्यवस्था करता है। परिवार अपने सदस्यों को संरक्षण प्रदान करने और उनके संस्कारों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली संस्था बनकर सामने आता है। परिवार के सभी सदस्य परिवार की सामूहिक उन्नति, विकास एवं हित–चिंतन हेतु प्रेरित रहते हैं। [6] उपरोक्त परिभाषाएं पारिवारिक स्तर के यथार्थ को प्रस्तुत करने में समर्थ है। परिवार उन व्यक्तियों के समूह को कहते हैं, जो विवाह, रक्त संबंध या गोद लेने द्वारा परस्पर सम्बद्ध हो। ये सम्बन्ध एक दूसरे पर प्रभाव डाले व एक दूसरे के साथ अन्ततः सम्पर्क रखें और इस प्रकार एक सर्व सामान्य संस्कृति का सृजन करके सुसंगठित रहे। 'स्थानातरण'लघंकथा में लेखक का मत देखिए–

"माता–पिता की सेवा न करनी पड़े। इसलिए सुधीर यहाँ तबादला नहीं करवाना चाहता।"

पिता ने सुधीर को सुनाते हुए अपने मित्र से कहा। "बेटे का क्या सुख है? कासों दूर पड़ा है। बदली करवाकर जान–बूझकर घर

नहीं आना चाहता। कहीं माता–पिता, भाई–बहन की जिम्मेवारी न सम्भालनी पड़ जाए।"
माँ ने पड़ोसन के बहाने सुधीर को सुनाते हुए कहा।
'यदि तबादला नहीं करवा सकते तो हमें भी अपने साथ ले चलो। यहाँ सास–ससुर के ताने सुनकर कलेजा छलनी हुआ पड़ा हैं।'
पत्नी ने सुधीर से कहा।
इस बार सुधीर ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह स्थानातरण कराकर ही दम लेगा। उसे पता चला कि उसके बड़े साले के शिक्षा मंत्री से अच्छे सम्बन्ध है। वह साले के साथ मंत्री जी के पास पहुँचा। फोन हुआ और अगले सप्ताह उसका स्थानातरण अपने शहर में हो गया।
'आखिर मेरे भाई ही काम आए!' पत्नी ने सुधीर पर कटाक्ष करते हुए कहा! सुधीर ने पत्नी को आश्चर्य से देखा। [7]
भारतीय परिवारों में मूल्यों का विघटन हुआ है। एक अजनबीपन, दिशाहीनता, कलह और घुटन का शिकार हुए हैं। दाम्पत्य सम्बन्धों में तनाव पनपा है। पति–पत्नी वैमनष्य से गुजर रहे हैं। नारी शिक्षित होकर अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक हुई है। पति–पत्नी अपना–अपना महत्त्व जताने के प्रयास में कुण्ठित रहते हैं। अहं जब टकराता है तो सम्बन्ध विच्छेद हो जाते हैं। श्री कैलाश चंद्र शर्मा की लेखकताओं में भी परिवार के सद्भाव एवं उसके टूटते–बिखरते रिश्तों को अभिव्यक्त किया गया है। पुरूष प्रधानता के प्रति आक्रोश भी लेखक ने जताया है। 'बटवारा'लघुकथा में वृद्ध की पीड़ा देखिए–
धीरेन्द्र बाबू जब से सेवानिवृत्त हुए थे उनका मन उखड़ा–उखड़ा रहता था, लेकिन कुछ दिनों बाद उन्हें धर्मार्थ डिस्पेंसरी में कंपाउडर पद पर पुनः नियुक्ति मिल गई थी। पहले भी वह सरकारी अस्पताल में कंपाउडर थे। उम्र का तकाजा–उन्हें घुटनों के दर्द ने भी परेशान कर दिया था। पत्नी के देहांत ने तो उन्हें और अकेला कर दिया था। जब वे छोटे बेटे के साथ रहते थे। पेंशन तथा वेतन छोटे बेटे के परिवार पर खर्च कर देते थे।
दोनों बेटे अलग–अलग होने पर भी झगड़ते रहते थे कि पिता जी ने बटवारा क्यों नहीं किया। घर जमीन सभी धीरेन्द्र बाबू के नाम था। केवल रहने के लिए बच्चों को अलग–अलग मकान दे रखे थे। बड़े बेटे ने एक दिन पत्नी के दबाव में आकर कह ही दिया।
"पिता जी! मता जी के ट्रंक का सामान तथा जमीन का बंटवारा क्यों नहीं करते? मुझे अपना हिस्सा चाहिए।"
धीरेन्द्र बाबू को आश्चर्य हुआ। जो बेटा सेवा न कर सका और ठीक ढंग से बात भी न करता था, उसे मेरी सम्पत्ति पर क्या हक है?
'ठीक है बांट लो। लेकिन क्या तुमने और तुम्हारी पत्नी ने हमारी सेवा की है? क्या तुमने कभी दुखःदर्द को बांटा है?
पुत्र के पास कोई भी उत्तर नहीं था। उन्होंने ट्रंक को खोलते हुए कहा–'यह लो बांटों अपनी माता जी की साड़ियां, सामान और छोटे बच्चों के पुराने कपड़े।" बड़े बेटे की हिम्मत न हुई उसकी आँखें जमीन में धँसती चली गई। ट्रंक में आभूषणों की कल्पना करने वाला पुत्र मात्र कपड़ों को देखकर स्तब्ध रह गया।
"तुम्हारी बहनों और तुम्हें पढ़ाय–लिखवाया, तुम्हारे शादी विवाह किए। तुमने कभी सोचा कम्पाउडर की नौकरी करने वाले बाप ने इतना सब कैसे किया?"
अब पुत्र बिलकुल निरूत्तर हो गया था। [8]
लेखक एक सचेत साहित्यकार हुए हैं। अतः इनके साहित्य में समाज की विभिन्न विसंगतियों को कथ्य का आधार बनाया गया है। मैक वेबर एण्ड पेज ने समाज की सटीक परीभाषा देते हुए लिखा है – समाज सम्बन्धों का जाल है। यह अपने आप में रीतियों, कार्यविधियों, अधिकार व आपसी सहायता, अनेक समूहों तथा उनके विभाजनों, मानव व्यवहार के नियन्त्रणों तथा स्वतन्त्रताओं की व्यवस्था है। यह निरन्तर परिवर्तित होती रहती है। इसके अन्तर्गत मानवीय सम्बन्धों की पूर्ण जटिलता या संकुलता निहित है, चाहे वे सम्बन्ध साध्य साधन, स्वाभाविक, प्रतीकात्मक अथवा क्रियाओं से उत्पन्न हो। कोई भी व्यक्ति समाज से अलग नहीं है। घने बीहड़ों में निवास करने वाले साधु–सन्यासी भी समाज के दायरे में ही आते हैं। नाथों, सिद्धों और अन्याय ऐसे विरागी साधुओं ने समाज से एक निश्चित दूरी रखी, परन्तु वे फिर भी किसी न किसी रूप में समाज से सम्बन्ध रहे और समाज भी उनसे प्रेरनाएं पाता रहा है। [9] लेखक स्वयं भी समाज का अभिन्न अंग है और उसके अधिकांश विषय भी समाज से जुड़े होते हैं। विशेषकर आधुनिक लेखकता सामाजिक अनुभूतियों के रंगो से खूब रंगी हुई है। सामाजिक जड़ताओं और कुसंस्कारों के विरूद्ध वैज्ञानिक सोच से जुड़कर इन लेखकताओं में जीवन की चिंताओं के व्यापक अहसास प्रकट हुए हैं। समसामयिक लेखकता में भी समाज में रह रहे आदमी के संघर्ष, उसके दुःख–दर्द और उसकी सामाजिक स्थिति का सजीव चित्रण मिलता है, परन्तु इससे भी बड़ी बात यह है कि आज की लेखकता में मानवीय सम्बन्धों में गिरावट, सामाजिक मूल्यों का अवमूल्यन और सामाजिक विषमताओं की सार्थक अभिव्यक्ति हुई है।'मर्यादा'लघुकथा में आधुनिक युवा वर्ग की मर्यादाहीनता देखिए–'देखो रोहिणी! हमारे साथ बैठना है तो अच्छे कपड़े, जींस, स्कर्ट वगैरह पहना करो। अगर तुम्हारे पास नहीं है तो मैं दिलवा दूंगी।" टीना ने अपनी सहेली पर व्यंग्य करते हुए कहा।
'मैं यह सब नहीं पहन सकती क्योंकि हमारे घर वाले यह पसंद नहीं करते। यह गरीब अवश्य हैं। सीमाओं का अतिक्रमण नहीं करते। हमारे माता–पिता के भी पारिवारिक संस्कार हमारे साथ हैं।"
'मैं इसे अंधविश्वास, रूढ़िवादी विचारधारा मानती हूँ। अब आधुनिक विचारधारा पर चलने का समय है।"
कॉलेज के कैंपस में एक पेड़ के नीचे पड़ रही टीना को अकेले पाकर कुछ मनचले युवकों ने छेड़खानी की। एक ने तो हाथ ही पकड़ लिया।
शोर सुनकर रोहिणी और उसकी सहेलियाँ आ गई। टीना के साथ छेड़खानी कर रहे लड़को ने उनके साथ भी बदतमीजी करने की जुर्रत की।
रोहिणी तथा उसकी सहेलियों ने उन पर चप्पलों से आक्रमण कर दिया। वह भाग खड़े हुए।
'यह सब तुम्हारे पाश्चात्य संस्कृति, फैशन व मैकअप का परिणाम है जो मनचले पीछे लगे।" रोहिणी ने कहा।
टीना रोने लगी। [10]
लेखक कर्म उसके कथ्य पर केंद्रित होता है। वह समाज का तिरस्कार नहीं कर सकता। 'लुटेरे छोटे छोटे' लघुकथा संग्रह में समाज की विभिन्न स्थितियों को कथ्य का आधार बनाया गया है। इनकी रचना धर्मिता में युग और समाज की संवेदना है। समाज में व्याप्त समस्याएँ रचना को व्यापकता प्रदान करती है। युग की परिस्थितियाँ रचनाकार की चेतना को रूपायित भी करती है। कोई भी रचना युग के संदर्भ से अलग रखकर नहीं आंकी जा सकती एवं न ही उसका कोई स्थायी महत्त्व होता है। श्री सत्यप्रकाश भारद्वाज ने राजनीति के विविध आयामों को जांचा परखा है। राजनैतिक परिस्थितियों में रह रहे राजनैतिक सरोकारों के प्रति कितने जागरूक हैं। इसलिए आज का लेखक भी राजनीति को केवल पृष्ठ भूमि नहीं मानता, बल्कि उसे आज की सबसे गत्यात्मक, प्रत्यक्ष और क्रूरतम वास्तविकता मानता है। लेखक भ्रष्ट राजनीतिज्ञों पर अंकुश का काम करता है–

'चुनाव–प्रचार अभी जोर नहीं पकड़ पाया था। न ही पोस्टर दिखाई देते थे। कहीं–कहीं इक्का–दुक्का रिक्शा लाऊडस्पीकर वाला पार्टी चुनाव प्रचार कर रहा था।

'यह आजादी की स्वर्ण–जयन्ती का और बीसवीं शाताब्दी का अंतिम चुनाव है। लोकतंत्र की रक्षा के लिए, वोट के अधिकार का प्रयोग करें। आपका कीमती वोट भारत का भविष्य निर्माण करेगा।"

फिर फिल्मी गीत बज उठा–'अपनी आजादी कोहम हरगिज भुला सकते नहीं।'

रामू काका अपने मित्र रहीम मियाँ से कह रहे थे–'देखो मियाँ! पचास वर्ष यूँ बीत गए जैसे कल की बात हो। इस दौरान गरीब और गरीब बन गए, अमीर और अमीर! क्या गराबों के वोट बटोकर उन्हें गुमराह करके अमीर हुकूमत चलाएं, यही हमारे शहीदों के लोंकतंत्र का प्रतीक हैं?"

"ठीक कह रहे हो भाई रामू! इस आजादी के लिए सभी भारतवासी एक झंडे के नीचे लड़े। आज उन्हीं अपमान का बदला घूँट पीना पड़ रहा है। प्रशासन को अफसरशाही व गुंडा–तंत्र ने जकड़ रख है। ऐसा लोकतंत्र चलता रहा तो जनता भी इनके पैंतरे समझ जाएगी। फिर देखना।"

कुछ दिनों के बाद चुनावी नतीजे चौंकाने वाले थे। घोटालों में संलिप्त नेता बुरी तरह हारे थे। लोकतंत्र पुनः अपनी मौजूदगी दर्ज करवा रहा था। [11]

आलोच्य लेखक इस बात से अच्छी तरह परिचित है कि समसामयिक राजनीति मात्र स्वार्थी एवं भ्रष्ट है। हिंसा, अपहरण, हत्या, लूटपाट, व्यभिचार, अनैतिकता आदि प्रवृतियाँ इनके काव्य में उभरी हैं। राजनेता चुनाव जीतने के लिए जनता से झूठे और खोखले वायदे करते हैं। असत्य का सहारा लेकर जनता को मूर्ख बनाने की चेष्ठा करते हैं। आज के नेताओं की मौका परस्ति का ही परिणाम है कि स्वतंत्रता के 50 वर्षों के बाद भी देश एक संपूर्ण इकाई नहीं हो पाया। वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में आम आदमी को तवज्जो चुनाव के समय ही दिया जाता है। चुनाव के बाद उसे अपने द्वारा चुने हुए नेता प्रतिनिधि से मिलने के लिए घंटों प्रतीक्षा करनी पडती है। नेता अपने स्वार्थ को सर्वपरि रखकर बार–बार दल बदल करते हैं, जिसमें मतदाताओं के अरमान धूमिल हो जाते हैं। नेताओं द्वारा की गई बेवफाई जन–मानस को असंतुष्ट और क्षुब्ध कर देती है। यशोन्मुखी प्रवृतियां साधारण जन के साथ–साथ संवेदनात्मक लेखक के अन्तः करण को आक्रोशित करती हैं और लेखक राजनीतिक व सामाजिक परिवेशगत विषमताओं को पूरी तन्मयता के साथ उद्वेलित करता है। लेखक इस सत्य से वाकिफ है कि आज के संपूर्ण तंत्र में आदमी घिनौनी राजनीति का शिकार है। सघन अंधकार में घिरा है। राज व्यवस्था से जुड़े लोगों के प्रति उसकी निष्ठा लुप्त हो रही है, उसे आभास है कि राजनेता केवल अपने हितों को सर्वोपरि मानते हैं। आमजन के हितों से कोई लगाव नहीं है। 'वास्तविकता'लघुकथा राजनीति पर करारा व्यंग्य है–

मंत्री आदिवासियों की स्थिति को देखने पहुँचा। जहां उसे ले जाया गया वहाँ लिपे–पुते सजे–कच्चे घर थे और थे बिजली के खंभे, वह यह देखकर चौंक गया।

एक बार तो उसे भी लगा कि देश ने इतनी प्रगति कर ली है, पर कुछ सोचकर उसने ड्राइवर को कार निश्चित मार्ग से हटाकर ले जाने को कहा।

थोड़ी दूर जाकर वह कार से नीचे उतरा। सामने टूटी–फूटी झोपड़ियाँ, कीचड़ भरे कच्चे रास्ते, नंग–धड़ंग बच्चे देश की प्रगति की कहानी कह रहे थे। [12]

निष्कर्ष

गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले नेता बड़ी–बड़ी बाते करते हैं। इनका मुख्य ध्येय कुर्सी की प्राप्ति होता है, जिसे पूरा करने के लिए ये लोग भोली–भाली जनता को भरमाते हैं– कभी रोजी–रोटी का प्रलोभन देकर तो कभी धार्मिक भावना को भड़काकर सांप्रदायिकता का जहर फैलाते हैं। देश की राज व्यवस्था से जुड़े सभी प्रश्न लेखक को उद्वेलित करते हैं और वह इन सभी अनुभूतियों को अपनी कृतियों की आधारवस्तु बनाता है। वह अपनी लेखकताओं में इनकी अनैतिकताओं को अनावृत करता है। जनता की असुरक्षा और असंतोष को वाणी देता है।

संदर्भ सूची

1. संपादक डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोष पृ0 205–206
2. संपादक डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोष पृ0 46
3. सत्यप्रकाश भारद्वाज 'लुटेरे छोटे छोटें' पृ0 19
4. संपादक डॉ0 भोला नाथ तिवारी, चित्रमय बालकोष पृ0... 358
5. सत्यप्रकाश भारद्वाज 'लुटेरे छोटे छोटें' पृ022
6. संपादक डॉ0 भोला नाथ तिवारी, चित्रमय बालकोष पृ0... 58
7. सत्यप्रकाश भारद्वाज 'लुटेरे छोटे छोटें' पृ025
8. सत्यप्रकाश भारद्वाज 'लुटेरे छोटे छोटें' पृ0 35
9. आर.एम. मैकलेवर एण्ड सी.एच.पेज, सोसायटी पृ0 238
10. सत्यप्रकाश भारद्वाज 'लुटेरे छोटे छोटें' पृ0 86
11. सत्यप्रकाश भारद्वाज 'लुटेरे छोटे छोटें' पृ091
12. सत्यप्रकाश भारद्वाज 'लुटेरे छोटे छोटें' पृ0 31